



कैसे तोलें हाथी?

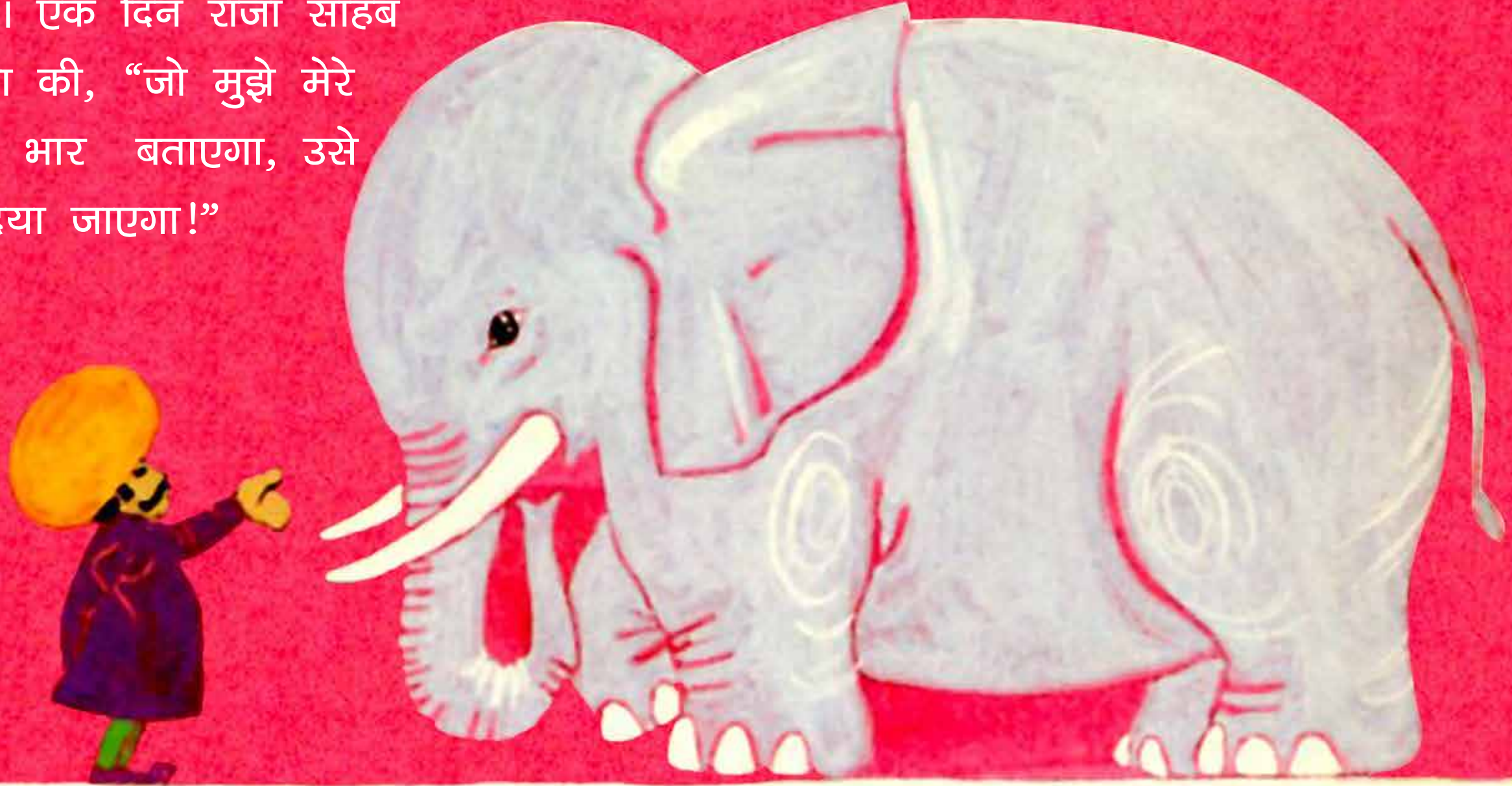
गीता धर्मराजन
चित्रांकन: सुजाशा दास



कथा की 300एम थिंकबुक



आसाम के राजा का एक पालतू हाथी था। एक दिन राजा साहब ने घोषणा की, “जो मुझे मेरे हाथी का भार बताएगा, उसे इनाम दिया जाएगा!”



राजा के मंत्रियों ने की कोशिश। राजा के
पंडितों ने की कोशिश।



सब्जी वालों ने कोशिश
की। रस्सी बनाने वालों
ने भी और सोनारों ने
भी कोशिश की!





और जब सब थक गए।
एक लड़की के दिमाग में बत्ती जली
वह हाथी को अपने साथ ले कर
नदी पर गयी।
फिर दोनों एक नाव बैठ गए।

नाव पानी में डूबने लगी। जब रुकी, तो लड़की ने नाव के उस हिस्से पर एक निशान लगाया। उसके बाद ...



नाव को पत्थरों से भर दिया। नाव डूबने लगी,
और डूबती गयी। जब पानी उस निशान तक आ
गया, तब उसने कहा, “ठहरो, अब नाव में भरे
पत्थरों को तोल लो।”

और इस तरह उन्होंने हाथी का भार
तोल लिया!



गीता धर्मराजन को बच्चों के लिए कहानियां लिखना पसंद है। वह बच्चों की पत्रिका टारगेट की सम्पादक थी। वह पेनसिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका – पेनसिलवेनिया गैजेट की भी संपादक थी। उन्हें 2012 में शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। सुजाता सिंह एक चित्रकार और विजुअल आर्ट्स (दृश्य कला) की शिक्षक हैं। उन्होंने बच्चों की कई किताबों के लिए डिजाइन और चित्र बनाए हैं।

कथा KATHA

Katha is a globally recognised non-profit organization (www.katha.org) that has been working in the literacy to literature continuum since 1988. Our nearly 30 years of experience is in publishing and education for children in poverty.

"An educational jewel in India's crown."

— Naoyuki Shinohara, Deputy Managing Director, IMF

"Katha stands as an exemplar for all the creative projects around the world that grapple with ordinary and dramatic misery in cities."

— Charles Landry, *The Art of City Making*

"Katha has a real soft corner for kids. Which is why it ... create[s] such gorgeous picture books for children."

— Time Out

"Katha's work is driven by the idea that children can bring change to their communities that is sustainable and real, just as the children do in [their books.]"

— PaperTigers

इस कहानी का पूरा हिस्सा पढ़ने के लिए कथा की पूरी किताब पढ़ें।



पहला हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 1990, 2021

लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन

चित्रांकन कृति स्वामित्व © कथा

स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्य: हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए-3 सर्वोदय एन्चलेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017

दूरभाष: 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998

ई-मेल: marketing@katha-org

वेबसाइट: www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा। कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।



यह पुस्तकें कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायीं हैं। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए हैं।

यह हमारे 'UntextBook Initiative' का हिस्सा हैं। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें। हमसे जुड़ें: 300m@katha-org स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha-org पर हमें लिखें

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है। यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

